Year-8; Sept. 2017
ISSN–2231-1130
UGC Sr. No. – 48398
VEETHIKA

अनौपचारिक शिक्षा का अभाव एवं मूल्य क्षरण अभाव

डॉ0 स्मिता श्रीवास्तव*
सुश्री शबनम**

संक्षिप्तिका

मूल्य व्यक्ति वे सामाजिक सरकारों से जुड़ा हुआ वह पक्ष है जो केवल सैद्धान्तिक नहीं है, इसका व्यवहारिक पक्ष अधिक महत्वपूर्ण है। इस व्यवहारिक पक्ष का गतिमान होना आवश्यक है, क्योंकि यदि मूल्य व्यक्ति के क्रियाकलापों में परिलक्षित नहीं होगा तो वह अपना मूल स्वरूप खो देगा।

व्यक्ति के मूल्यों के निर्धारण में उसका परिवार, शैक्षिक संस्थान, समाज आदि की महत्वपूर्ण भूमिका है। व्यक्ति जन्म से ही सीखना प्रारम्भ कर देता है। उसके अधिगम प्रक्रिया में उससे जुड़ा प्रत्येक व्यक्ति महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है।

अतः परिवार, विद्यालय एवं समाज की भूमिका अहम हो जाती है। बच्चों का मन कच्चे घड़े के समाज है उसे सही आकार–प्रकार प्रदान किया जा सकता है। परन्तु पके घड़े पर मिट्टी चढ़ाना एक कठिन कार्य है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने मूल्यों के महत्व को समझाते हुए ही कार्य करने चाहिए। क्योंकि उसके कार्यों का प्रभाव अन्य लोगों पर भी पड़ता है।

प्रस्तुत आलेख में मूल्यों के मुख्य श्रोत में आ रही विसंगतियों की विशद विवेचना की गई है। जिसमें यह तथ्य मुख्य रूप से उभर कर आता है। कि परिवार को अपनी संरचना एवं नैतिक दायित्वों को भली–भांति समझने की आवश्यकता है।

मूल्य एक ऐसा सम्प्रत्यय है जो सीधे हमारी भावनाओं से जुड़ा है। और हमारे व्यवहार का एक महत्वपूर्ण पहलू है। वर्तमान समाज में तेजी से इन मूल्यों का ह्यस होता जा रहा है। इसका कारण है भौतिकतावादी जिन्दगी। हम भले ही भौतिकतावादी समाज का हिस्सा होते हुए आधुनिकता की ओर बढ़ते जा रहे हैं परन्तु अपने मूल्य, संस्कृति, विचार आदि को भूलते जा रहे हैं।

सी.वी. गुड मूल्यों को चरित्र की विशेषता मानते हैं जो मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सौन्दर्य–बोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मूल्य चरित्र का निर्माण करते हैं समाज में हमारे व्यवहार को निर्धारित करते हैं। अच्छाई–बुराई, अच्छा जीवन–बुरा जीवन, अच्छा कार्य–बुरा कार्य, और सदाचार आदि का निर्धारण हमारे मूल्यों से होता है। हमारे चरित्र एवं व्यवहार की दिशा का निर्धारण भी मूल्यों द्वारा निर्धारित है। समाज भी उस व्यक्ति को महत्व देता है जो समाज के नियम, कायदे–कानून को मानते हुये उस समाज का हिस्सा बने।

मूल्यों की जड़ें समाज के प्रत्येक व्यक्ति के मन की गहराइयों में निहित होती हैं जिनका उसके वास्तविक जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। व्यक्ति का पारिवारिक जीवन, सामाजिक जीवन, एवं व्यवसायिक जीवन कैसा होगा यह उसके व्यवहार एवं उसके मूल्यों पर निर्भर करता है।

''व्यक्ति के मूल्यों के निर्धारण में उसका परिवार, शैक्षिक संस्थान, समाज आदि की महत्वपूर्ण भूमिका है। व्यक्ति जन्म से ही सीखना प्रारम्भ कर देता है उसके अधिगम प्रक्रिया में उससे जुड़ा प्रत्येक व्यक्ति महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। ''व्यापक रूप में यदि देखें तो मूल्यों के निर्धारण में शिक्षा एवं शिक्षा के श्रोतों की महत्वपूर्ण भूमिका है। व्यापक अर्थ में शिक्षा जीवन –पर्यन्त चलने वाली सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके कौशलों में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन होता है।

शिक्षा का स्वरूप समाज के अनुसार बदलता रहता है। जैसा समाज वैसी शिक्षा या समाज जिस दिशा की ओर अग्रसर है उसी दिशा में शिक्षा भी अपने उद्देश्यों के स्वरूप को परिवर्तित कर लेती है। परन्तु बदलते समाज स्वरूप में खोकर शिक्षा को मानवता का निर्माण भी करना है। शिक्षा को युग–परिवर्तन को देखते हुए संस्कृति, मूल्यों, व्यवहार, विचार की श्रेष्ठता के महत्व को नहीं

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर इन्टीग्रल यूनीवर्सिटी लखनऊ
** असिस्टेन्ट प्रोफेसर इन्टीग्रल यूनीवर्सिटी लखनऊ

भूलना चाहिए। बदलते समाज एवं नई पीढ़ी को देखते हुए शिक्षा एवं शिक्षकों के लिए एक कठिन कार्य की तरह है कि वह नई पीढ़ी को मूल्यों के महत्व से परिचित करा सके।

मूल्य शिक्षा का अर्थ

मूल्य शिक्षा से अभिप्राय विद्यार्थियों में मानवीयता की भावनाओं का विकास करना है। दूसरों एवं समाजहित एवं राष्ट्र के प्रति सकारात्मक भावनाओं का निर्माण करना है। मूल्य शिक्षा एक माध्यम है जिससे विद्यार्थी सकारात्मक व्यवहार एवं नकारात्मक व्यवहार के अन्तर को समझाने का प्रयास करता है एवं भविष्य में यही समझ उसके व्यवहार को वातावरण एवं परिस्थितियों के अनुकूल बनाती है। मूल्य शिक्षा कोई एकल विषय नहीं है। अपितु यह आध्यात्मिकता, नीतिशास्त्र, आधुनिकता समाजशास्त्र एवं व्यक्ति की अपनी समझ को अपने आप में समेंटे हुए है।

मूल्य शिक्षा के श्रोत

मूल्य शिक्षा के मुख्य रूप से दो श्रोत हैंः–

1. औपचारिकता शिक्षा अथवा विद्यालयी शिक्षा
2. अनौपचारिक शिक्षा

औपचारिक शिक्षा अथवा अनौपचारिक शिक्षाः–

औपचारिक शिक्षा, शिक्षा का वह श्रोत है जहां निर्धारित समय के अन्तर्गत निर्धारित पाठ्यक्रम के माध्यम से योग्य शिक्षकों के द्वारा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के अन्तर्गत विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान की जाती है। अन्य विद्यालयी विषयों की तरह मूल्य शिक्षा कोई पृथक विषय नहीं है और न ही मूल्य शिक्षण के लिए विद्यालयों में कोई अलग शिक्षक रखा जाता है। विद्यालयों में मूल्य शिक्षा अप्रत्यक्ष रूप से सभी शिक्षक–गण, प्रबन्धन कमेटी विद्यार्थियों एवं अनुशासन आदि का सहयोगात्मक क्रिया का प्रतिफल है यह अदृश्य पाठ्यचर्या का एक हिस्सा है। हम इसे अदृश्य पाठ्यचर्या का महत्वपूर्ण हिस्सा भी कह सकते हैं जहां ये अनुभवों के माध्यम से व्यवहार में सम्मिलित हो जाते है। पुस्तकों में आधुनिक जीवन, आदर्श व्यक्तियों के विचार, समाज की संस्कृति आदि ही मूल्य निर्माण का कार्य करते हैं।

अनौपचारिक शिक्षा

मूल्य शिक्षा के विकास में अनौपचारिक शिक्षा के अभिकरण एवं साधन महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। इसके अन्तर्गत माता, परिवार एवं समाज की भूमिका को अनदेखा नहीं किया जा सकता। माँ बालक की प्रथम शिक्षिका एवं परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई है। एक बालक के कोमल मन पर जो कच्ची मिट्टी के समान है, जिसे आकार देने का कार्य परिवार करता है, की भूमिका अहम है।

फ्रोबेल ने माता को आदर्श आध्यापिका माना तथा घर द्वारा दी जाने वाली शिक्षा को सबसे प्रभावशाली शिक्षा का रूप बताया। क्योंकि इसी के आधार पर प्रत्येक अलग–अलग परिवारों के बालकों के व्यवहार में भिन्नता पाई जाती है। वास्तव में मूल्य शिक्षा का प्रारम्भ बालक के घर से होता है एवं घर में भी माता का व्यवहार बालक के व्यवहार पर सबसे अधिक प्रभाव डालता है।

परिवार के पश्चात् बालक के व्यवहार एवं मूल्यों के निर्धारण में समाज की भूमिका भी अपना अलग महत्व रखती है। समाज मानव सम्बन्धों का जाल है। व्यक्ति एवं समाज में घनिष्ठ सम्बन्ध है। समाज में जिन मूल्यों को महत्व दिया गया है वे हैंः– वैज्ञानिक दृष्टिकोण, स्वतन्त्रता, न्याय आत्मसम्मान शहरीकरण, आधुनिकीकरण, एकल परिवार संकल्पना एवं मीडिया में समाज के मूल्यों पर प्रभाव डाला है। कहीं न कहीं आधुनिकता की ओर बढ़ते समाज ने मूल्यों का ह्रास किया है। मानवता का महत्व कम होता जा रहा है। भांति–भांति की समस्यायें उत्पन्न होती जा रही हैं। किसी के पास किसी के लिये समय नहीं है। भाग दौड़ भरी जिन्दगी में व्यक्ति सिवाय अपने, किसी की ओर देखना नहीं चाहता। समाज में मानवीय मूल्य एवं नैतिक मूल्यों का स्तर घटता जा रहा है। इसका एक कारण पारिवारिक संरचना में बदलाव भी है। परिवार में सदस्यों के मध्य बढ़ते आपसी तनाव, संवाद की कमी, एवं पीढ़ी के अन्तर ने कहीं नैतिक मूल्यों के स्तर को घटाया है। परिवार के सदस्यों के पास एक मेज पर खाना खाने का समय नहीं, प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक अलग कमरे का

निर्माण, घर के वृद्ध व्यक्तियों की अवहेलना, संयुक्त परिवार से एकल परिवार की तरफ भागना आदि ने प्रत्येक सदस्य को दूसरे सदस्य से दूर कर दिया है। यदि माता–पिता दोनों ही रोजगार में संलग्न हैं तो वे अपने बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते, उनके पास समय नहीं कि वे अपने बच्चों की जरूरत या समस्याओं पर विचार विमर्श कर सके। परिवार में बच्चे आपस में झगड़ा न करें इसके लिए खाने की वस्तु सबके लिए अलग–अलग आती है, यही परिस्थितियां बालकों में सहयोग एवं भाईचारे की भावना के विकास को रोक देती हैं। बालक 'हम' में न जीकर 'स्व' में जीने लगता है। वह केवल खुद के विषय में सोचता है। उसे किसी से कोई मतलब नहीं। उसके 'स्व' के कारण वह अपनें सुख और दुःख को महत्व देता है; दूसरे के सुख या दुःख का उसके जीवन पर तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ता है।

पारिवारिक संरचना में बदलाव के कारण :–

पारिवारिक संरचना में बदलाव के निम्निलिखित कारण हैं:–

1. महिला रोजगार
2. एकल परिवार
3. शहरीकरण
4. आधुनिकीकरण
5. मीडिया

1. महिला रोजगार

महिला रोजगार ने जहां एक तरफ महिलाओं के सषक्तीकरण के आधार का काम किया है, तो वहीं दूसरी तरफ इसके नकारात्मक प्रभाव भी उत्पन्न हुए हैं। इन नकारात्मक प्रभावों को सामाजिक मूल्यों की दृष्टि से अनदेखा नहीं किया जा सकता। महिला जो एक परिवार का आधार होती है, धुरी होती है, अति–आवश्यक अंग होती है, कहीं न कहीं रोजगारपरक होने के कारण अपना समय अपने परिवार एवं अपने बच्चों को नहीं दे पाती। एक मां अपने बच्चों के भविश्य को लेकर चिंतित/सचेत रहती है, उसके व्यवहार को सही आकार प्रदान करती है। आत्मनिर्भरता के कारण, रोजगार में संलग्न होने के कारण कहीं न कहीं अपने बच्चों की देखभाल, उनके पालन–पोषण पर पूर्ण रूप से ध्यान नहीं दे पाती। जिसके कारण कहीं न कहीं बालकों का सामाजिक विकास, संवेगात्मक विकास में भी अवरोध आता है। वह महत्व देता है उसे, जिसे वह ठीक समझता है, न कि उसे जो समाज के अथवा परिवार के अनुसार सही है।

2. एकल परिवार

वर्तमान समाज से संयुक्त परिवार की संकल्पना धीर–धीरे समाप्त होती जा रही है। समाज के बदलते आर्थिक परिवेश में लोगों की प्राथमिकताएं बदल गई एवं व्यक्ति व्यक्तिगत हितों के बारे में अधिक विचार करने लगा। यहीं से एकल परिवार की संकल्पना ने जन्म लिया। भौतिकवाद समाज, प्रतिस्पर्धा प्रधान युग, आर्थिक स्वावलंबन एवं आत्मनिर्भरता के कारण लोगों के पास अपने परिवार को देने के लिए समय नहीं है। एकल परिवार के पीछे एक कारण यह भी है कि पति–पत्नी अब आर्थिक रूप से स्वतन्त्र रहना चाहते हैं, वे अपने फैसलों पर किसी का हस्तक्षेप नहीं चाहते। भले ही एकल परिवार ने व्यक्ति को स्वतन्त्रता और आत्मनिर्भरता प्रदान की हो परन्तु इसका सबसे बड़ा नकारात्मक पहलू यह है कि एकल परिवारों में पलने–बढ़नें वाले बच्चे बड़े होकर अपने माता–पिता को छोड़कर चले जाते हैं। दादा–दादी, नाना–नानी की कहानियां सुनकर बड़े होने वाले बच्चों में मूल्यों की समझ एकल परिवार में पलने–बढ़ने वाले बच्चों से अधिक होती है। एकल परिवारों की संकल्पना ने बच्चों में स्नेह की भावना, सदाचार, भाईचारा, सही और गलत की पहचान को कम कर दिया है। अतः मूल्यों के क्षरण के लिए एकल परिवार भी उत्तरदायी हैं।

3. शहरीकरण :–

जनसंख्या जब अपनी आवश्यकताएं पूरी करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर पलायन करती है तो उसे शहरीकरण कहते हैं। शहरों की बढ़ती जनसंख्या अनेक समस्याओं को जन्म दे रही है। इन समस्याओं में प्रमुख हैः– बाल अपराध, मादक वस्तुओं का सेवन एवं बढ़ते हुए अन्य अपराध समाजशास्त्र के अनुसार गांवो में, आत्मनिर्भरता, सामूहिकता, एकता, दुःख सुख के साझेदार व पारिवारिक संयुक्तता के प्रतीक हैं। वहीं

दूसरी ओर शहरीकरण के कारण नगरों में व्यक्ति निजी हितों के बारे में सोचता है। अकेलापन, माता–पिता व बच्चों के बीच की दूरियां शहरों की पहचान बन गए हैं। शहरीकरण के कारण बुनियादी मूल्यों का भी पतन होता जा रहा है। तत्कालिक जीवन को सुखमय बनाने की होड़ में हम कहीं न कहीं अपनी संस्कृति और सभ्यता को भूलते जा रहे हैं। वर्तमान समाज में मूल्य, मानवता सम्बन्धी बात निरर्थक लगने लगी है। शहरीकरण ने समाज को आधुनिक आयामों से तो जोड़ दिया परन्तु मूल्यों में कमी के कारण समाज खोखला होता जा रहा है।

4. आधुनिकीकरणः–

आधुनिक समाज पश्चिमी संस्कृति को अपनाता जा रहा है। समाज जैसे–जैसे आधुनिकता की ओर बढ़ रहा है वैसे–वैसे विचारधारा में भी परिवर्तन आता जा रहा है। आज पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव हमारे जीवन पर दिखाई पड़ रहा है। आधुनिकीकरण विकास के लिये महत्वपूर्ण है परन्तु इसे अपनाने की होड़ में हम अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। मूल्यों में हमारी आस्था खत्म होती जा रही है। विद्यार्थी पश्चिमी मूल्यों से प्रभावित हैं। पश्चिमी मूल्यों के प्रति आकर्षण बढ़ता जा रहा है। भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्य पिछड़ते जा रहे हैं। भारतीय संस्कृति और मूल्य आज के मनुष्य को पुराने और रूढ़ीवादी जान पड़ते हैं। आधुनिकता की होड़ में मानव अपने मूल मूल्यों को भी भूल गया है।

5. मीडियाः–

मीडिया सूचना संप्रेषण का एक सशक्त माध्यम है। एक ही जगह से बैठकर सूचना को एक सेकेन्ड में आम जन तक रेडियो, टी0वी0 आदि के माध्यम से पहुंचाया जा सकता है। मीडिया सूचना सम्प्रेषण के साथ–साथ अनौपचारिक शिक्षा का भी माध्यम है। परन्तु अनैतिक कार्यों के व खबरों एवं सूचनाओं के चलते इसकी विश्वसनीयता और वैधानिकता को ठेस पहुंचती है। लोगों की प्राथमिकताएं बदलती जा रही हैं। 'स्व' की भावना को अधिक बल मिला है। 'हम' की भावना का ह्रास होता जा रहा है। मूल्यों का परिवर्धन एवं परिमार्जन शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव है।

''अतः परिवार, विद्यालय एवं समाज की भूमिका अहम हो जाती है। बच्चों पर और अधिक ध्यान देने की आवष्यकता है। बच्चों का मन कच्चे घड़े के समान है। उसे सही आकार–प्रकार प्रदान किया जा सकता है। परन्तु पके घड़े पर मिट्टी चढ़ाना एक कठिन कार्य है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने मूल्यों के महत्व को समझते हुये ही कार्य करने चाहिए/ क्योंकि उसके कार्यों का प्रभाव अन्य लोगों पर भी पड़ता है।''

संदर्भ –

1. एन,एस.रघुनाथन.(२०१३).मूल्य शिक्षा.चेन्नई, तमिलनाडु: मरघाम प्रकाशन
2. तिवारी, डॉ. राजश्री. (२०१६). मूल्य शिक्षा. आगरा, उत्तर प्रदेश: राखी प्रकाशन
3. भारती,डॉ.प्रेम.(१८९९)भारतीय नैतिक शिक्षा. दरयागंज, नई दिल्ली: किताबघर प्रकाशन
4. शर्मा,वाई.के.& कोच,एच.कुलदीप.(२००७).मूल्यों के लिए शिक्षा,पर्यावरण एवं मानवाधिकार.रौजरी गार्डन,नई दिल्ली:रीगल प्रकाशन
5. सत्यपथ,एस.के.(२००७).पर्यावरणीय शिक्षा एवं स्थाइ विकास.प्रतापगंज,नई दिल्ली: शिप्रा प्रकाशन
6. श्री,जय.(२००८).मूल्य पर्यावरण और मानवाधिकार की शिक्षा.प्रतापगंज,नई दिल्ली: शिप्रा प्रकाशन